

दिल का क्या कुसूर-8

“ तभी अचानक मुझे अपने अन्दर झरना सा चलता महसूस हुआ। अरूण का प्रेम दण्ड मेरे अन्दर प्रेमवर्षा करने लगा। अरूण के हाथ खुद ही ढीले हो गये...
और उसी पल..... [\[Continue Reading\]](#) ... ”

Story By: (funny123)

Posted: Wednesday, July 18th, 2012

Categories: [चुदाई की कहानी](#)

Online version: [दिल का क्या कुसूर-8](#)

दिल का क्या कुसूर-8

तभी अचानक मुझे अपने अन्दर झरना सा चलता महसूस हुआ। अरूण का प्रेम दण्ड मेरे अन्दर प्रेमवर्षा करने लगा। अरूण के हाथ खुद ही ढीले हो गये... और उसी पल... आह... उईईईई... मांSSSS... मैं भी गई... हम दोनों का स्वलन एक साथ हुआ... मैं अब धीरे धीरे उस स्वर्ग से बाहर निकलने लगी। मैं अरूण के ऊपर ही निढाल गिर पड़ी। अरूण मेरे बालों में अपनी उंगलियाँ चलाने लगे और दूसरे हाथ से मेरी पीठ सहलाने लगे।

मेरे लिये तो यह भी एकदम नया था क्योंकि संजय तो हर बार काम करके अलग होकर सोने चले जाते। मुझे समझ में आने लगा कि अरूण में क्या खास है? कुछ देर उनके ऊपर ऐसे ही पड़ रहने के बाद मैं हल्की सी ऊपर हुई तो अरूण ने मेरे माथे पर एक मीठा प्यार भरा चुम्बन दिया, पूछने लगे, “अब मैं जाऊँ, इजाजत है क्या?”

मैंने दीवार घड़ी की तरफ देखा और हंसने लगी, “हा... हा... हा... हा...”

“हंस क्यों रही हो?” अरूण ने पूछा।

“जनाब एक बजकर बीस मिनट हो चुके हैं और आपकी गाड़ी तो पक्का चली गई होगी।”

अरूण ने तुरन्त दीवार घड़ी की तरफ देखा, फिर मेरी तरफ देखकर मुस्कराने लगे बोले,

“आखिर तुमने मुझ पर अपना जादू चला ही दिया।”

“किसने किस पर जादू चलाया ये तो भगवान ही जानता है।” मैंने हंस कर कहा।

अरूण फिर से मेरे स्तनों से खेलने लगे।

“आह... बहुत दर्द है।” अचानक मेरे मुँह से निकला।

अरूण मेरी तरफ देखकर पूछने लगे, “तुम्हारी शादी को 12 साल होने वाले हैं और तुम दोनों रोज सैक्स भी करते हो तब भी आज तुम्हारे स्तनों में दर्द क्यों होने लगा?”

“वो कभी भी इनसे इतनी बेदर्दी से नहीं खेलते।” बोलते हुए मैं उनके ऊपर से उठ गई।

“ओह...” अरूण के मुँह से निकला। शायद उनको अपनी गलती का अहसास होने लगा।

मैंने पास ही पड़े छोटे तौलिये से अपनी रिसती हुई योनि और अरूण के बेचारे निरीह से दिख रहे लिंग को साफ किया और बाथरूम में धोने चली गई। अरूण भी मेरे पीछे पीछे बाथरूम में आये और पानी से ‘सबकुछ’ अच्छी तरह धोकर वापस बिस्तर पर जाकर लेट गये।

बाथरूम से वापस आकर मैंने अपना गाउन उठाया और पहनने लगी तो अरूण ने मुझे अपनी ओर खींच लिया।

‘हाययय...’ एक झटके से मैं अरूण के पास बिस्तर पर जा गिरी, अरूण बोले, “थोड़ी देर गाउन मत पहनो प्लीज, मेरे पास ऐसे ही लेट जाओ। ऐसे ही बातें करेंगे।”

पर अब मुझ पर से सैक्स का नशा उतर चुका था, ऐसे तो मैं कभी संजय के सामने भी नहीं रही थी, और अरूण तो परपुरुष थे, मुझे शर्म आ रही थी। मैं अरूण की बाहों में कसमसाने लगी, “प्लीज, मुझे शर्म आ रही है। मैं गाउन पहन कर आपके पास बैठती हूँ ना...” मैंने कहा।

अरूण हंसते हुए बोले, “अब भी शर्म बाकी है क्या हम दोनों में।”

पर मैं थी कि शर्म से गड़ी जा रही थी... और अरूण थे कि मानने को तैयार नहीं थे। काफी

देर तक बहस करने के बाद हम दोनों में सहमति हो गयी अरूण बत्ती बन्द करने को राजी हो गये और मैं लाइट ऑफ करने के बाद उनके साथ बिना गाउन के लेटने को ।

हम दोनों ऐसे ही अपनी परिवार की और न जाने क्या क्या बातें करने लगे । बातें करते करते मुझे तो पता ही नहीं चला कि अरूण को कब नींद आ गई । मैंने घड़ी देखी रात के 2 बज चुके थे पर नींद मेरी आँखों से कोसों दूर थी ।

अचानक अरूण ने मेरी ओर करवट ली और बोले, “पानी दोगी क्या, प्यास लगी है !”

मैं उठी और अरूण के लिये पानी लेने चली गई । वापस आई तो अरूण जग चुके थे और मेरे हाथ से पानी लेकर पीने के बाद मुझे खींचकर फिर से अपने पास बैठा लिया और अपना सिर मेरी गोदी में रखकर लेट गये । मैं उनके बालों को सहलाने लगी, मैंने देखा उनका लिंग मूर्च्छा से बाहर आने लगा था उसमें हल्की हल्की हरकत होने लगी थी । अरूण ने शायद मेरी निगाह को पकड़ लिया । थोड़ा सा घूम कर वो मेरे बराबर में आये और खुद ही मेरा हाथ पकड़कर अपने लिंग पर रख दिया ।

अपने एक हाथ से अरूण मेरे होठों को सहलाना शुरू किया और दूसरे हाथ से मेरे उरोजों को, और फिर अचानक ही अपना दूसरा हाथ हटा लिया ।

मैंने पूछा, “क्या हुआ ?”

उन्होंने कहा, “मैं भूल गया था तुमको दर्द है ना !”

पर तब तक तो मेरा दर्द काफूर हो चुका था । मैंने खुद ही उनका हाथ पकड़ का अपने कुचों पर रख दिया और वो फिर से मेरे उभारों से खेलने लगे पर इस बार वो बहुत ही हल्के और मुलायम तरीके से मेरे निप्पल को सहला रहे थे, शायद वो कोशिश कर रहे थे कि मुझे फिर से दर्द ना हो उनको क्या पता कि मैं तो उस दर्द को पाने के लिये ही तड़प रही थी ।

उनके लिंग पर मेरे हाथों की मालिश का असर दिखाई देने लगा। वो पुनः कामयुद्ध के लिये तैयार था। मैं भी अब खुलकर खेलना चाहती थी। मैं खुद ही घूम कर अरूण के ऊपर आ गई और उनके होठों को अपने होठों में दबा लिया। हम दोनों अपनी दूसरी पारी खेलने के लिये तैयार थे। अरूण मेरे नितम्बों को बड़े प्यार से सहलाने लगे, मैं उनके होठों को फिर ठोड़ी को, गर्दन को, उनकी चौड़ी छाती को चूमते हुए नीचे की ओर बढ़ने लगी।

मैं उनकी नाभि में अपनी जीभ घुसाकर चाटने लगी, उनका लिंग मेरी ठोड़ी से टकराने लगा। मैंने खुद को थोड़ा सा और नीचे सरकाकर

अरूण के लिंग को अपनी दोनों होठों के बीच में दबोच लिया। अब मैं खुल कर मुख मैथुन करने लगी।

अरूण को भी बहुत मजा आ रहा था, ये उनके मुँह ने निकलने वाली सिसकारियाँ बयान कर रही थी। परन्तु मेरी योनि में तो फिर से खुजली होने लगी। मजबूर होकर मुझे फिर से अरूण के ऊपर 69 की अवस्था में आना पड़ा। ताकि वो मेरी योनि को कुछ आराम दे सकें।

वो तो थे भी अपने खेल में माहिर। उन्होंने तुरन्त अपनी जीभ से मेरी मदनमणि को सहलाना शुरू कर दिया। धीरे धीरे मेरी योनि के अन्दर जीभ ठेल दी और अन्दर तक योनि की सफाई का प्रयास करने लगे।

आह... हम दोनों तो पुनः आनन्दविभोर थे।

अरूण रति क्रिया में मंझे हुए खिलाड़ी थे। जिसका परिचय वो पहली पारी में ही दे चुके थे। इस बार तो मुझे खुद को सिद्ध करना था। मैं बहुत ही मजे लेकर अरूण के कामदण्ड को चूस रही थी और उनकी दोनों गोलियों के साथ खेल भी रही थी। अरूण मेरी योनि में अपनी जीभ से कुरेदते हुए अपने दोनों हाथों को मेरे नितम्बों की दरार पर फिरा रहे थे।

मुझे उनका यह करना बहुत ही अच्छा लग रहा था। “आह...” तभी मैं दर्द से कराह उठी।

उन्होंने अपनी तर्जनी उंगली मेरी गुदा में जो धकेल दी थी। मैं कूदकर बिस्तर से नीचे आ गई।

अरूण ने पूछा, “क्या हुआ?”

मैंने कहा, “आपने पीछे उंगली क्यों डाली? पता है कितना दर्द हुआ?”

अरूण बोले, “इसका मतलब पीछे से बिल्कुल कोरी हो क्या?”

मैंने अन्जान बनते हुए कहा, “छ्ठी :... पीछे भी कोई करता है भला?”

अरूण बोले, “क्या यार? लगता है तुम्हारे लिये सैक्स का मतलब बस आगे डालना... और बस पानी निकालना ही है...?”

“मतलब?” मैंने पूछा।

अरूण बोले, “यार, कैसी बातें करती हो तुम? सैक्स सिर्फ पानी निकाल को सो जाने का नाम नहीं है। यह तो एक कला है, पूरा विज्ञान है इसमें, इसमें मानसिक और शारीरिक कसरत भी है और पूर्ण सन्तुष्टि भी, काम को पूर्ण आनन्द के साथ ग्रहण करोगी तभी सन्तुष्टि मिलेगी।”

मैं तो उनका कामज्ञान सुनकर दंग थी। अभी तो उनका कामपुराण और भी चलता अगर मैं नीचे फर्श पर बैठकर उनका कामदण्ड अपने होठों से ना लगाती तो। अब तो उनका कामदण्ड भी अपना पूर्णाकार ले चुका था।

तभी अरूण बिस्तर से खड़े हो गये और मुझे भी फर्श से खड़ा कर लिया। मुझको गले से लगाया और खींचते हुए ड्रेसिंग टेबल के पास ले गये। कमरे में लाइट जल रही थी हम दोनों आदमजात नंगे ड्रेसिंग के सामने खड़े थे। अरूण मुझे और खुद को इस अवस्था में

शीशे में देखने लगे ।

मेरी निगाह भी शीशे की तरफ गई, इस तरह बिल्कुल नंगे इतनी रोशनी में मैंने खुद को कभी संजय के साथ भी नहीं देखा था । मैं तो शर्म से पानी पानी होने लगी । मैंने जल्दी से वहाँ से हटने की कोशिश की । पर अरूण को शायद मेरा वहाँ खड़ा होना अच्छा लग रहा था । वो तो जबरदस्ती मुझे वहीं पकड़कर चूमने चाटने लगे ।

मैं उनकी पकड़ ढीली करने की कोशिश करती पर वो मजबूती से पकड़कर मेरे स्तनों को वहीं आदमकद शीशे के सामने चूसने लगे । मैं शीशे में अपने भूरे रंग के कड़े हो चुके कुचाग्र पर बार बार उनकी जीभ की रगड़ लगते हुए देख रही थी, यह मेरे लिये बहुत ही रोमांचकारी था ।

मेरी शर्म धीरे धीरे खत्म होने लगी । अब मैं भी वहीं अरूण का साथ देने लगी तो उनको सीने से लगाकर अपने एक हाथ से उनका कामदण्ड सहलाने लगी । शीशे में खुद को ये सब करते देखकर एक अलग ही रोमांच उत्पन्न होने लगा । शर्म तो अब मुझसे कोसों दूर चली गई ।

अरूण ने भी मुझे ढीला छोड़ दिया । वो नीचे फर्श पर पालथी मारकर मेरी दोनों टांगों को खोलकर उनके बीच में बैठ गये । नीचे से अरूण ने मेरी योनि को चाटना शुरू कर दिया । एक उंगली से अरूण मेरे भंगाकुर को सहेज रहे थे ।

“उईईईई...” मेरे मुँह से निकला, मैं तो जैसे निढाल सी होने वाली थी, इतना रोमांच जीवन में पहली बार महसूस कर रही थी ।

मैंने नीचे देखा अरूण पालथी मार कर बैठे थे, उनका कामदण्ड तो जैसे ऊपर की ओर मुझे ही घूर रहा था । मैं भी अपने घुटने मोड़ कर वहीं शीशे के सामने अरूण की तरफ मुँह करके

उनकी गोदी में जा बैठी। यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं।

और “आहहह..” उनका कामदण्ड पूरा का पूरा एक ही झटके में मेरे कामद्वार में प्रवेश कर गया।

मैं असीम सुख महसूस कर रही थी। मैंने अपनी टांगों से अरूण की पीठ को जकड़ लिया। अरूण ने फिर से अपने मुँह में मेरे चुचूक को भर लिया। मेरे नितम्ब खुद-ब-खुद ही ऐसे ऊपर नीचे होने लगे जैसे किसी संगीत की ताल पर नृत्य कर रहे हों।

अरूण भी मेरे चुचूक चूसते चूसते नीचे से मेरा साथ देने लगे। बिना किसी ध्वनि के ही पूरा संगीतमय वातावरण बन गया, कामसंगीत का...! हम दोनों का पुनः एकाकार हो चुका था।

मुझे लगा कि इस बार मैं पहले शहीद हो गई हूँ। अरूण का दण्ड नीचे से लगातार मेरी बच्चेदानी तक चोट कर रहा था। तभी मुझे नीचे से अरूण का फव्वारा फूटता हुआ महसूस हुआ। अरूण ने अचानक मुझे अपने बाहुपाश में जकड़ लिया और मेरी योनि में अपना काम प्रसाद अर्पण कर दिया।

मैं लगातार शीशे की तरफ ही देख रही थी। अब मुझे यह देखना बहुत सुखदायी लग रहा था पर शरीर में जान नहीं थी, मैं वहीं फर्श पर लेट गई परन्तु अरूण इस बार उठकर बाथरूम गये, खुले दरवाजे से मुझे दिख रहा था कि उन्होंने एक मग में पानी भरकर अपने लिंग को अच्छे से धोया, तौलिये से पौछा और बाहर आ गये।

उनके चेहरे पर जरा सी भी थकान महसूस नहीं हो रही थी, उनको देखकर मुझे भी कुछ फूर्ति आई। मैं भी बाथरूम में जाकर अच्छी तरह धो पौछ कर बाहर आई। घड़ी में देखा 3.15 बजे थे मैंने अरूण को आराम करने को कहा।

कहानी जारी रहेगी।

me.funny123@rediffmail.com

